उपसंहार

गांधी जी का चिंतन व दर्शन इतनी विविधता लिए हुए है कि समय काल खण्ड या परिस्थितियाँ जो भी हो ,उस समय के विचारों की आलोचना व उससे होने वाली परेशानियों के समाधान के कुछ तत्व मिल ही जाते हैं.इसलिए गांधी जी को कुछ विद्वान परम्परावादी,आधुनिकतावादी ,इतिहासविद के रूप में व्याख्यायित करते हैं. प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में गांधी जी अपने दृष्टिकोण से इतिहास को व्याख्यायित कैसे करते है ? तथा क्या वह भी अन्य विद्वानों कि भांति ही इतिहास के विषय में सोचते थे .

द्वितीय अध्याय में,इतिहास और इतिहास दृष्टि के विषय में बताया गया है .इस अध्याय में इतिहास क्या है उसका अर्थ परिभाषा तथा उसकी प्रकृति के विषय में लिखा गया है .जिसमें विभिन्न विद्वान ने अपने अपने तरीके से इतिहास को परिभाषित किये हुए हैं. और उसकी प्रकृति के विषय में बताते हैं कि इतिहास सिर्फ चिट्ठों का बंडल नहीं है या फिर इतिहास सिर्फ कागजों पर लिखा हुआ कोई किताब या सिर्फ दस्तावेज नहीं कहा जा सकता है .अलग अलग विचारकों ने अलग अलग कहा है ,किसी ने अतीत और वर्तमान के बीच समय के संवाद के रूप में लिए है ,तो किसी ने अतीत और भविष्य के समय के कृत्यों को ,किसी ने महान वृतांतों को ,तो किसी ने युद्धों को ही इतिहास माना है .

तृतीय अध्याय में,विभिन्न इतिहास दृष्टियों का एक तुलनात्मक अध्ययन किया गया है .जिसमें कई इतिहास दृष्टियाँ जैसे परम्परावादी,आदर्शवादी ,मार्क्सवादी ,मानववादी,वैदिक एव परम्परावादी इत्यादि दृष्टिकोण का विश्लेषण है .जिसमें मार्क्स,हीगल,अगस्टिन ,क्रोचे,विवेकान्नद,दयानंद सरस्वती इत्यादि ने के विचारों को प्रस्तुत किया गया है, जिसमें उनकी दृष्टि से इतिहास दर्शन का वर्णन है .

चतुर्थ अध्याय में,गांधी जी की इतिहास दृष्टि संबंधी विचार-विमर्श किया गया है .इस अध्याय में जिस प्रकार से गांधी जी इतिहास के किये गए अन्य व्याख्याओं को नकारते है और अपने इतिहास दृष्टि को प्रतिस्थापित करते है उसी प्रकार गांधी जी अन्य प्रतिस्थापित इतिहास व्याख्याओं का खण्डन भी करते है .वह इतिहास को अपनी नई दृष्टि से देखते है जिसमें जो इतिहास में वर्णित नहीं है उसका

वर्णन करते है .जिसे इतिहासकारों ने अपने इतिहास में शामिल नहीं किया है उसे ही गांधी जी इतिहास के दृष्टि से महत्वपूर्ण बताया है . उनके इतिहास दृष्टि में प्रेम और सौहार्दय है न कि हिंसा और घृणा .गांधी जी इतिहास कि व्याख्या अपने सत्य और अहिंसा के द्वारा करते है जिसमे वह द्वंद्ववाद को भी अपनाते है किन्तु मार्क्स कि भांति नहीं अपितु वह पशु-बल और आत्म-बल में द्वंद्व को बताते है .

अतः निष्कर्षतः हम कह सकते है कि गांधी जी अपने इतिहास दृष्टि के अंर्तगत इतिहास को देखने का एक नया नजरिया हमें प्रदान करते है जो वास्तव में इतिहास में शामिल नहीं किया गया है .जो किया जाना चाहिए जिसके कारण वर्तमान में मानवीय अस्तित्व बची हुई है .यदि सिर्फ युद्ध और इति-वृतांत ही इतिहास होता तो समाज नष्ट हो जाता क्योंकि युद्ध में सर्वदा सिर्फ हानि ही होती है. लाभ कम होता है या यूं कहे कि लाभ का महत्व मानव सभ्यता को नहीं है क्योंकि युद्ध के उपरांत एक सभ्यता का विनाश हो जाता है . और जो मानवीय सभ्यता पर असर पड़ता है वह बहुत हानि होती है. इसलिए गांधी जी युद्धों के इतिहास को इतिहास नहीं मानते है,वह युद्धों के उपरांत बचें लोगों में आपसी सहयोग और परम्परा को बचा रखते है उनके लेखन कि आशा करते है .वह मानव के सिर्फ पाश्विकता को नहीं बल्कि प्रेम और सहयोग ,सत्य अहिंसा को मानते है . जिसे इतिहास ने दर्ज नहीं किया है .